मन्सा सेवा - 54

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **वायवेशन अन्दर वैठ जाता है ना। और वोल तो उसी समय भूल जायेगा लेकिन वायब्रेशन रूप में मन और बुद्धि में छाप लग जाती है।** और कितना समय उसी वायब्रेशन के वश, उस व्यक्ति से व्यवहार में आते हो। **चाहे उल्टा हो, चाहे सुल्टा हो लेकिन वायब्रेशन मुश्किल से मिटता है। लेकिन यह रूहानी वायब्रेशन्स फैलाने के लिए पहले अपने मन में, बुद्धि में व्यर्थ वायब्रेशन्स समाप्त करेंगे तब रूहानी वायब्रेशन फैला सकेंगे।**

➳ _ ➳ **किसी के भी प्रति अगर व्यर्थ वायब्रेशन्स धारण किये हुए हैं तो रूहानी वायब्रेशन्स नहीं फैला सकते। व्यर्थ वायब्रेशन रूहानी वायब्रेशन के आगे एक दीवार बन जाती है।** चाहे सूर्य कितना भी प्रकाशमय हो, अगर सामने दीवार आ गई, बादल आ गये - तो सूर्य के प्रकाश को प्रज्ज्वलित होने नहीं देते। **जो पक्का वायब्रेशन है - वो है दीवार और जो हल्के वायब्रेशन हैं - वो है हल्के बादल या काले बादल। वो रूहानी वायब्रेशन्स को आत्माओं तक पहुँचने नहीं देंगे।**

➳ _ ➳ जैसे सागर में कोई जाल डालकर अनेक चीजों को एक ही बार इकट्ठा कर देते हैं या कहाँ भी अपनी जाल फैलाकर एक समय पर अनेकों को अपना बना लेते हैं, **तो वायब्रेशन्स एक ही समय पर अनेक आत्माओं को आकर्षित कर सकते हैं। वायब्रेशन्स वायुमण्डल बनाते हैं। तो आगे की सेवा में वृत्ति द्वारा रूहानी वायब्रेशन से साथ-साथ सेवा करो, तभी फास्ट होगी। वायब्रेशन और वायुमण्डल के साथ-साथ वाणी की भी सेवा करेंगे तो एक ही समय पर अनेक आत्माओं का कल्याण कर सकते हो। (26/03/1993)**

➢ **हमारे मन के वाइब्रेशन (सकाश) दूसरी आत्माओ तक कैसे नहीं पहुच सकते है ? उसके कारण क्या ?**

➳ _ ➳ **जब हमारे मन में बहुत ज्यादा व्यर्थ चल रहा होता है**

➳ _ ➳ **MISUNDERSTANDING**

➳ _ ➳ **संशय बुध्धि**

→ अपने पर ही शक होता है की,

■ हम जो वाइब्रेशन दे रहे है

▶ पता नहीं वो पहुच रहा है भी की नहीं

➳ _ ➳ **स्वार्थ है**

➳ _ ➳ **यदि हद में है तो**

➳_ ➳ **सूक्ष्म द्वेष**

➳_ ➳ **आत्माओ के प्रति सुक्ष्म इर्ष्या**

→ यदि सूक्ष्म में भी इर्ष्या भाव है

- किसी की सफलता को देख इर्ष्या करते है
  - ▶ तो हमारी सकाश उन्हें नहीं पहुचेगी

➳_ ➳ **सूक्ष्म धुणा**

→ इतनी सूक्ष्म द्वेष और धुणा भावना रखते है की,

- कई बार उसका हमे भी पता नई होता है
  - ▶ अगर किसी के भी प्रति धुणा भाव है
  - ▶ तो हमारी सकाश उन्हें पहुच ही नहीं सकती है

➳_ ➳ **लगाव - झुकाव / मोह / ATTACHMENT**

→ जिन आत्माओ के साथ हमारा बहुत लगाव है

- उनको हम सकाश देंगे तो उन तक सकाश नहीं पहुच सकेगी
- **क्युकी सकाश देने की सेवा बिना बेहद के वैराग्य क्र हो ही नहीं सकती है**
  - ▶ **हमे स्वयं को इन लगाव से कट कर देना है**
  - ▶ MENTALLY & EMOTIONALLY डीटेच होना होगा
  - ▶ हम इतना ATTACH हो जाते है और फिर सकाश देते है की वो ज्ञान में आ जाय
  - ▶ तो हम ही बाधा रूप बन रहे होते है,
  - ▶ उनके ज्ञान में आने के
  - ▶ जब मोह टूटेगा तब वह स्वतः ज्ञान में आ जायेगा
  - ▶ **तो यह सूक्ष्म मोह, लगाव, आसक्ति, ATTACHMENT यह दीवार है**
  - ▶ **यह बादल है**
  - ▶ हमारी सकाश आत्माओ तक न पहुचाने मे

➳_ ➳ **SUPERIORITY COMPLEX**

→ जिसमे देह भान है, स्वयं को बहुत बड़ा समझने लगते है

- और दुसरो को जो बहुत छोटा समझने लगते है
  - ▶ तब भी हमारी सकाश दुसरो तक नहीं पहुच सकती है

➳_ ➳ **INFERIORITY COMPLEX (हिन भावना)**

→ **हम अपने आपको बहुत ही छोटा समझते है**

- **जबकि भगवान ने हमे बहुत बड़े बड़े स्वमान दिया है**
  - ▶ परंतु समझते है, हम यह नहीं कर सकते
  - ▶ हमसे यह नही होगा

- ▶ हमसे तो पुरुषार्थ भी नहीं होता है
- ▶ तो सकाश तो हम कहा से दे सकेंगे
- ▶ **यह हिन भाव ज्ञान के प्रति, सेवा के प्रति, पुरुषार्थ के प्रति रखते है**
- ▶ दूसरा भाषा के प्रति भी रखते है, की यह हिंदी भाषा तो हमे समझ में ही नहीं आती है, बहुत मुश्किल है

➳_ ➳ **SELF VICTIMISATION**

→ कुछ भी हो तो पहले स्वयं को ही दोषी ठहराना

- ■ हर चीज, हर परिस्थिति में, हर समय खुद को BLAME करना
  - ▶ मैं नही होता तो शायद यह ठीक होता
  - ▶ हर चीज में स्वयं की ही गलती मानना
  - ▶ की मेरी वजह से ही हो रहा है
  - ▶ मेरा ही दोष है
  - ▶ **और स्वयं को दुखी करना और रोना / उदास हो जाना**

➳_ ➳ **GUILT COMPLEX**

→ पाप हुआ है मुझसे और उस पाप से, उस भाव

- ■ बहार ही नही निकल पा रहा हु
  - ▶ बस यही दिमाग में चलता रहता है
  - ▶ की, मेरे से गलती हुई, मेरे से गलती हुई
  - ▶ होनी थी गलती हो गई
  - ▶ अब स्वयं को माफ़ कर दो
  - ▶ कब तक स्वयं को दुःख देते रहोगे
  - ▶ दुःख में जिया करोगे
  - ▶ अपराधभाव जहा होगा वह तो न पुरुषार्थ कर पायेगा
  - ▶ न जीवन की मौज ले पायेगा

➳_ ➳ इन सब मेसे कोई भी बात अगर हमारे अंदर है

→ **तो वो हमारे लिये दिवार का काम करती है**

- ■ उस पर हमे अकेले ही काम करना है
  - ▶ देखना है, अपने आपको जानना है की, बीमारी क्या है
  - ▶ **उपरोक्त सब मेसे कोनसी बात हमारे अंदर है**
  - ▶ **उस दिवार को तोड़ देना है**
  - ▶ **उन बादलों को हटा देना है**